International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

स्वराज पार्टी की राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका

अशोक कुमार
Lect. in History M.A. , NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सार :–

असहयोग आन्दोलन के स्थगन के बाद देश की राजनीति की रिक्तता को स्वराज्य पार्टी व इसके राजनीतिक कार्यक्रम द्वारा भरा गया । चौरी–चौरा की घटना के बाद असहयोग आन्दोलन वापिस ले लिया गया । परिवर्तनवादी इस निर्णय से खुश नहीं थे तथा उन्होंने अपनी लड़ाई जारी रखी और मार्च 1923 ई0 में स्वराज्य पार्टी की स्थापना की । इस पार्टी के निर्माण में सी0 आर0 दास तथा मोती लाल नेहरू का महत्वपूर्ण योगदान था[2]। स्वराज्यवादियों का मुख्य कार्यक्रम सरकार के प्रस्तावों का विरोध करना , बजट को अस्वीकृत करना , भारत के लिए प्रगतिशील योजनाओं को कौंसिलों में प्रस्तुत करना तथा महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग देना था।

मुख्य शब्द :–

असहयोग आन्दोलन , राजनीतिक रिक्तता , चौरी–चौरा , परिवर्तनवादी , स्वराज्यवादी , बजट , रचनात्मक कार्यक्रम।

भूमिका :–

असहयोग आन्दोलन के स्थगित हो जाने के उपरान्त देश के सामने कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था और गांधी जी के कारावास के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन काफी धीमा पड़ गया था । इधर सरकार भी दमन का सहारा ले रही थी और हिन्दू मुस्लमानों के बीच साम्प्रदायिक तनाव दिन–प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे थे। अतः कुछ कांग्रेसियों का असहयोग की कार्य पद्धति से विश्वास उठ गया था और वे कांग्रेस के कार्यक्रम में परिवर्तन की मांग करने लगे थे। अतः उन्होंने 1923 ई0 में इलाहाबाद में अपने समर्थकों का अखिल भारतीय सम्मलेन बुलाया तथा सी0 आर0 दास के नेतृत्व में ''स्वराज्य पार्टी'' की स्थापना की[4]। जिसने अपने कार्यक्रम में अंग्रेजी सरकार के नकारात्मक कार्यों में बाधा बनकर देश के लिए रचनात्मक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया तथा राष्ट्रीयता की भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

शोध – प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध–पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध सामग्री को प्रसिद्ध पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। और आनुभाविक दृष्टिकोण के द्वारा शोध कार्य को गति देने का प्रयास हुआ हैं। वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितियक स्त्रोतों से उपलब्ध अध्ययन सामग्री पर आधारित हैं।

शोध के उददेश्य :–

इस शोध पत्र को निम्न उद्देश्यों के सन्दर्भ में लिखा गया हैं :–

राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वराज्य पार्टी की भूमिका का आंकलन करना।

राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वराज्य पार्टी के योगदान को समझना।

राष्ट्रीय आन्दोलन पर स्वराज्य पार्टी के प्रभाव का मूल्यांकन करना ।

स्वराज्य पार्टी का उद्देश्य व कार्यक्रम :–

स्वराज्य पार्टी की स्थापना के बाद निश्चित यह हुआ कि नई पार्टी कांग्रसे के अंदर ही रहेगी लेकिन चुनाव लड़ेगी । भारतीय विधान सभा और प्रांतीय विधान परिषदों में चुने हुए स्वराज्य पार्टी के सदस्य मांग करेंगें कि ब्रिटिश शासन राष्ट्रीय मांगों को एक निश्चित तिथि से पहले पूरा करें। मांग को अस्वीकार करने पर विधान मण्डलों में सरकारी कार्य में बाधा डाली जाएगी। पार्टी ने यह भी निर्देश दिया कि उसका कोई भी सदस्य ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया गया सरकारी पद किसी भी हालत में स्वीकार न करे । पार्टी ने नगरपालिका के चुनाव में हिस्सा लेने , मजदूरों के संगठन के काम को आगे बढ़ानें , ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार , एशियाई देशों के संघ की स्थापना , कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों के समर्थन आदि का फैसला किया। सितम्बर 1923 ई0 में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन तक स्वराज्यवादियों ने अपनी शक्ति काफी बढ़ा ली थी[6] ।उन्होंनें गया के प्रस्ताव को अस्वीकृत कराके उसके स्थान पर कौंसिलों में प्रवेश करने के पक्ष में नया प्रस्ताव पास करा लेने में सफलता प्राप्त की । 1923 ई0 के विधानमण्डल चुनावों में स्वराज्यवादियों को आशातीत सफलता मिली[3]। भारतीय विधान सभा की चुनी हुई सीटों में से लगभग आधी पर स्वराज्यवादियों का कब्जा हो गया।

स्वराज्य दल और कांग्रेस दोनों का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर रहते हुए स्वराज्य प्राप्त करना था। फिर भी इन दोनों के तरीकों में काफी अन्तर था। स्वराज्य दल का तरीका ब्रिटिश कौंसिल के भीतर से नौकरशाही का सामना तथा निरंतर प्रतिरोध करना था[5]। कौंसिल के अन्दर बजट अस्विकृत करना तथा कानूनों के प्रस्ताव पारित नहीं होने देना था । इस तरह स्वराजवादी ब्रिटिश नौकरशाही की शक्ति को कमजोर बना देना चाहते थे। उन्होंने कौंसिल से बाहर पूरे हृद्य से गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को स्वीकार किया और कांग्रेस संगठन में रहकर ही कार्य करने का वचन दिया। वे मजदूरों तथा किसानों के शोषण को रोकना चाहते थे तथा उनकी उन्नती के लिए योजनाएं बनाना चाहते थे । उन्होंने घोषणा की कि अगर नौकरशाही ने लोगों का शोषण नहीं रोका तो वे बिना किसी शर्त के गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग तथा अवज्ञा– आन्दोलन के कार्य में लग जांएगे।

स्वराज्य दल का कहना था कि उनका कार्यक्रम असहयोग को विधान मण्डलों तक पहुंचाना हैं और उन्होने इसी दृष्टिकोण से कार्य भी किया[7]। दल की मुख्य राजनैतिक मांगें थी – राजनीतिक बन्दियों की मुक्ति , दमनकारी कानूनों की समाप्ति तथा शासन सुधारों पर एक गोलमेज परिषद का आयोजन ।अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वराजवादियों ने निम्नलिखित कार्यक्रम निश्चित किया[10]।

1. सरकार के उन प्रस्तावों का विरोध करना और यदि सम्भव हो तो अस्वीकृत करना जिनके द्वारा नौकरशाही शक्तिशाली बनने का प्रयत्न करती हैं।

2. सरकारी बजट को अस्वीकृत करना।
3. उन प्रस्तावों , योजनाओं और विधेयकों को कौंसिल में प्रस्तुत करना , जिनेक द्वारा राष्ट्र की शक्ति में वृद्धि हो ।
4. कौंसिल के बाहर महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग प्रदान करना।

स्वराज्य दल ने केन्द्रिय विधान सभा में मोती लाल नेहरू के नेतृत्व में स्वतन्त्र सदस्यों तथा राष्ट्रवादियों का सहयोग प्राप्त कर काम चलाऊ बहुमत बना लिया। फरवरी 1924 ई0 में मोती लाल नेहरू ने '1919 के शासन विधान में परिवर्तन ' के अभिप्रायः से एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो सरकार के विरोध के बावजूद पारित हो गया । यह प्रस्ताव था – ''यह परिषद् सपरिषद् गवर्नर जनरल से आग्रह करती हैं कि भारत में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना करने के उद्देश्य से भारतीय शासन अधिनियम में देश में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना हेतू संसोधन किए जाए तथा इसके लिए –

1. भारत के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों का एक गोलमेज सम्मेलन[8] का आयोजन किया जाए , जो देश के महत्वपूर्ण अल्पसंख्यकों के अधिकारों और हितों को ध्यान में रखते हुए भारत के लिए संविधान निर्मित करें। तथा
2. वर्तमान व्यवस्थापिका सभा को भंग करके नवनिर्मित व्यवस्थापिका सभा के सम्मुख यह योजना प्रस्तुत की जाए और उसे बाद में ब्रिटिश संसद को कानून बनाने के लिए प्रेषित किया जाए '' ।

प्रान्तों में भी स्वराज दल ने अपनी नीति के अनुरूप भूमिका निभाई । बंगाल और मध्य प्रांत में उनको विशेष सफलता मिली । बंगाल में स्वराज्य दल का स्पष्ट बहुमत था , लेकिन सी0 आर0 दास ने न केवल मन्त्रीमण्डल बनाना अस्वीकृत किया अपितु अन्य किसी को भी मन्त्रीमण्डल का निर्माण नहीं करने दिया । 20 मार्च 1924 ई0 को पार्टी ने दो मन्त्रियों को त्यागपत्र देने के लिए बाध्य कर दिया । 1925 ई0 में सी0आर0 दास ने द्वैध शासन प्रणाली के कफन में अन्तिम कील ठोकने के अपने निश्चय में सफलता प्राप्त कर लेने का दावा ठीक ही किया था । स्वराज्यवादियों के अविराम हस्तक्षेप के कारण अन्त में गवर्नर को सदन भंग कर देने के लिए विवश होना पड़ा ।

जून 1925 में सी0 आर0 दास की मृत्यु[9] के पश्चात् कुछ स्वराज्यवादियों में परिवर्तन होने लगा और सरकार ने सहयोगी नेताओं को विभिन्न समितियों में स्थान देकर खुश करना शुरू कर दिया । 1924 में कुछ प्रमुख स्वराजवादियों को 'इस्पात सुरक्षा समिति ' में स्थान दिया गया । 1925 में स्वयं मोतीलाल नेहरू ने 'एकीन समिति' की सदस्यता स्वीकार कर ली। वी0 जे0 पाटिल केन्द्रिय व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष चुने गए और एस0 वी0 टाम्बे गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य नियुक्त हुए।

इस प्रकार 1924 के बाद स्वराज दल की नीति में पूर्णतया परिवर्तन हो गया । असहयोग का स्थान उत्तरदायी सहयोग ने ले लिया जिसके कारण स्वराज्य दल अपने मकसद में विमुख हो गया और जनता में उसका आकृषण जाता रहा परिणामस्वरूप 1926 ई0 में कौंसिल का निर्वाचन हुआ जिसमें स्वराज–दल जो 1923 के निर्वाचनों की अपेक्षा बहुत कम सफलता प्राप्त हुई। फिर भी स्वराज दल के कुछ सफलताएं भी प्राप्त की ।

स्वराजवादियों की सफलताएं_:–

जिस समय कांग्रेस की गतिविधियां शांत पड़ी थी उस समय स्वराजदल ने राजनीति को गर्म बनाए रखा। द्वैध शासन प्रणाली को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की।

स्वराजवादियों की गोलमेज सम्मलेन की मांग को अन्ततः 1930 में स्वीकार कर लिया गया।

साइमन कमीशन और मुडीसन कमीशन की नियुक्तियां भी स्वाजवादियों के प्रयासों का परिणाम थी।

कपास पर उत्पाद शुल्क की समाप्ति , नमक कर में कटौती और मजदूर संघों की सुरक्षा दिलवाने में स्वराजदल की अहम भूमिका रहीं।

इस प्रकार स्वराज दल मृतप्राय हो गया , लेकिन स्वराज दल के पतन का सबसे महत्वपूर्ण कारण सी0 आर0 दास की असामयिक मृत्यु थी। वे न केवल अखिल भारतीय स्तर पर दल को संगठित करने में सफल हुए थे , बल्कि अपने गुणों के कारण दल के उद्देश्यों के लिए गांधी जी का समर्थन प्राप्त करनें में भी सफल हुए थे। 1926 के बाद स्वराज दल इतिहास बनकर रह गया , क्योंकि यह अपना मूल स्वरूप खो चुका था।

संदर्भ सूची :–

1. Swaraj Party and Gandhi , S.R. Bakshi , Atlantic Publishers , Page 70-71
2. A text Book on colonialism & Nationalism in India: Raj to Swaraj , Ram Chandra Pradhan , Page -146
3. The Pearson General Knowledge Manual -2017 , Page –C-61
4. भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष : विपिन चन्द्र ,Page-179
5. स्वाधीनता संग्राम बदलते परिप्रेक्ष्य ,Page-24
6. यंग इण्डिया , 3 जुलाई 1924
7. आधुनिक भारत , सुमित सरकार ,Page -247-48
8. The way to Swaraj Speches of Desabandhu Das , Madras -193, Page-169
9. History Modern India , S.N.Sen. , Page-190
10. स्वराज पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : S.R.Bakshi – 1985 , Page - 44